वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 382
ISBN-978-93-82071-62-4

श्री शांतिभक्ति विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव-2012, पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 61वें त्यागदिवस के अवसर पर घोषित चारित्रवर्धनोत्सव वर्ष 2012-2013 के अन्तर्गत पूज्य माताजी के 58वें आर्यिका दीक्षा दिवस अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2539	मूल्य
1100 प्रतियाँ	वैशाख कृ. दूज, 27 अप्रैल 2013	16/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–स्वस्तिश्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

सुरेन्द्र-मुकुट-स्फुरद्विविधरत्न-कांत्युल्लसच्।
चलन्मधुकरैर्हि यस्य चरणाब्जयुक् चुम्बितम्।।
भवत्यपि हृदि स्मृतं सकलतापशान्तयै क्षणात्।
स्तवीमि सततं तमेव किल शांतिनाथं मुदा।।1।।

श्री शान्तिनाथ भगवान, जिनके चरणों का हृदय में स्मरण मात्र करने से जीवों के सम्पूर्ण संताप की शांति क्षणमात्र में हो जाती है। ऐसे शान्तिनाथ भगवान की मैं सतत स्तुति करता हूँ।

जिनेन्द्र भगवान की स्तुति, भक्ति कर्मनिर्जरा में विशेष कारण है। भक्त भगवान की भक्ति करते-करते एक दिन स्वयं भगवान बन जाता है। पूज्य माताजी हमेशा अपने प्रवचनों में कहती हैं प्रत्येक प्राणी की आत्मा भगवान आत्मा है। जैसे बीज में वृक्ष, तिल में तेल, दूध में घी शक्तिरूप में विद्यमान है, वैसे ही प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति विद्यमान है।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के प्रथम पट्टशिष्य चारित्रचूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त करने वाली, वर्तमान में सभी पीछीधारी साधुओं में सबसे प्राचीन गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य क्षेत्र में एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

इनकी लेखनी से लिखा गया एक-एक शब्द मोती की माला के समान है। 365 दिनों में प्रायः अनेक स्थानों में पूज्य माताजी द्वारा रचित इन्द्रध्वज, शांतिविधान आदि होते ही रहते हैं।

यह 'शांतिभक्ति विधान' पूज्य माताजी ने श्रीमती शांति देवी, लखनऊ निवासी जो कि पूज्य माताजी की गृहस्थावस्था की लघु बहन है, उनकी प्रार्थना से लिखकर प्रदान किया है। इनके निमित्त से लिखा गया यह विधान इनके लिए तो शांतिकर, लाभकारी होवे ही, साथ ही इस विधान को करने, कराने वाले सभी महानुभाव, रोग, शोक, दुख, दारिद्र्य को दूर कर सुख, शांति एवं सम्पत्ति को प्राप्त करें, यही मंगल भावना है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

सुभक्तिवरयंत्रतः स्फुटरवा-ध्वनिक्षेपकात्।
सुदूर-जिन-पार्श्वगा भगवतः स्पृशंति क्षणात्।।
पुनः पतनशीलतोऽवपतिता नु ते स्पर्शनात्।
भवन्त्यभिमतार्थदाः स्तुतिफलं ततश्चाप्यते।।1।।

भगवान शांतिनाथ की स्तुति करते हुए परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने कितने सुन्दर भाव संजोए हैं–

जैसे आज रेडियो, टेलीफोन, बेतार का तार आदि के द्वारा शब्द बहुत दूर तक पहुँचाए जाते हैं, वैसे ही भक्तिरूपी यंत्र से स्तोत्ररूपी शब्द सिद्धशिला तक भगवान के पास पहुँच जावें, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, 300 ग्रंथों की लेखिका, सरस्वती की प्रतिमूर्ति, राष्ट्रगौरव, युगनायिका, चारित्रचन्द्रिका, युगप्रवर्तिका, आर्यिकाशिरोमणि परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, सिद्धचक्र, तीनलोक आदि बड़े-बड़े विधानों के साथ शांति विधान, ऋषिमण्डल विधान, जिनगुणसंपत्ति विधान, बीस तीर्थंकर विधान, त्रिकाल चौबीसी विधान आदि मिलाकर 40-50 की संख्या में विधानों की रचना की है।

उसी शृँखला में यह श्री ''शांतिभक्ति विधान'' भी पूज्य माताजी की कृपा- प्रसाद से समस्त भक्तों को प्राप्त हो रहा है। डालीगंज-लखनऊ नि. सौ. शांति देवी जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन ने निवेदन किया कि एक लघु शांति विधान की रचना पूज्य माताजी कर दें तो बहुत अच्छा होगा, क्योंकि मुझे प्रतिदिन शांति विधान करने की इच्छा होती है। उनके निवेदन पर पूज्य माताजी ने इस लघु विधान की रचना हम सभी के लिए प्रदान की है। यह विधान अति चमत्कारिक विधान है। जिस शांतिभक्ति की रचना करने से आचार्यश्री पूज्यपाद स्वामी की नेत्रज्योति वापस आ गई थी, उसी स्तोत्र पर रचा गया यह विधान नेत्ररोग को दूर करने में, नेत्रज्योति को लाने में सहायक सिद्ध होगा। शांतिनाथ भगवान की पूजा में पूज्य माताजी ने कितने सुन्दर शब्द संजोए हैं–

श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याच्या नहीं।।

इस ''शांतिभक्ति विधान'' में श्री शांतिनाथ भगवान की पूजा, पंचकल्याणक के अर्घ्य एवं शांतिभक्ति के 16 अर्घ्य हैं, 1 पूर्णार्घ्य है, 1 जयमाला, 1 बड़ी जयमाला और अंत में प्रशस्ति है।

यह विधान सर्वव्याधि को दूर कर भवरोग को भी दूर करने में समर्थ है। पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु हों, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

श्री शांतिभक्ति विधान

मंगल स्तोत्र

-पृथ्वी छंद-

शतेन्द्र - मुनिवृंद - वंदित - मनोज्ञ - सौन्दर्यभृत्।
सुषोडश च तीर्थकृत् त्वमिह पंचमश्चक्रभृत्।।
स्तुते त्वयि च पूज्यपाद-मुनिनामले स्तो दृशौ।
ममापि खलु शान्तिनाथ! वितनु प्रसन्नां दृशम्।।1।।

–शम्भु छन्द –

सौ इन्द्र वंद्य मुनिवृंदवंद्य, बारहवें कामदेव सुन्दर।
षोडश तीर्थंकर शांतिनाथ! प्रभु आप पाँचवें चक्रेश्वर।।
स्तोता मुनि पूज्यपाद की, तुमने दृष्टी किया प्रसन्न।
हे प्रभु शांतिनाथ! मुझ पर भी, अब निज दृष्टी करो प्रसन्न।1।।

श्री शांति प्रभो! शरणागत जन, शान्ती के दाता कहें तुम्हें।
यह धन्य हुई हस्तिनापुरी, जहाँ राज्य किया शांतीश्वर ने।।
विश्वसेन पिता ऐरादेवी, माता का अतिशय पुण्य खिला।
भादों वदि सप्तमि को प्रभु के, गर्भागम का सौभाग्य मिला।।2।।

शुभ ज्येष्ठ वदी चौदस आई, शांतीश्वर ने जब जन्म लिया।
सुरगृह में बाजे बाज उठे, इन्द्रों ने मस्तक नमित किया।।
त्रिभुवन में शांति लहर दौड़ी, नरकों में कुछ क्षण शांति हुई।
गिरि मंदर पर अभिषेक हुआ, उत्सव में भू नभ एक हुई।।3।।

शांतीश प्रभू चक्रीश बने, षट्खंड मही का भोग किया।
शुभ ज्येष्ठ वदी चौदस के दिन, बस चक्ररत्न को त्याग दिया।।
इक शतक साठ कर तनु सुन्दर, आयू इक लाख वर्ष प्रभु की।
तपनीय कनक सम कांति विभो! मृग लांछन से जाने सब ही।।4।।

प्रभु ध्यान चक्र को ले करके, मोहारि नृपति को मारा था।
वर पौष सुदी दशमी के दिन, भव्यों को मिला सहारा था।।
षोडश तीर्थंकर कामदेव, द्वादश पंचम चक्री स्वामी।
वर ज्येष्ठ वदी चौदस के दिन, त्रिभुवन साम्राज्य मिला नामी।।5।।

प्रभु नर्क-निगोद अरु विकलत्रय, दुःखों को सहता आया हूँ।
तिर्यंच-मनुज-सुर गतियों के, दुःखों से खूब सताया हूँ।।
अब इष्टवियोग-अनिष्टयोग के, दुःख से भी घबराया हूँ।
तुम शांती के दाता भगवन्, अतएव शरण में आया हूँ।।6।।

सम्यग्दर्शन औ ज्ञान चरण, ये रत्नत्रय निधि मुझे मिली।
तनु से ममता भव बीज अहा! सम्यग्दृक् कलिका आज खिली।।
हे शांतिनाथ! मैं नमूँ सदा, बस भक्ती का फल एक मिले।
कैवल्य ''ज्ञानमति'' प्राप्त करूँ, बस मुझको सिद्धी शीघ्र मिले।।7।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

भगवान श्री शांतिनाथ जिनपूजा

अथ स्थापना –गीता छंद

हे शांतिजिन! तुम शांति के, दाता जगत विख्यात हो।
इस हेतु मुनिगण आपके, पद में नमाते माथ को।।
निज आत्मसुखपीयूष को, आस्वादते वे आप में।
इस हेतु प्रभु आह्वान विधि से, पूजहूँ नत माथ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक –गीता छंद

चिरकाल से बहुप्यास लागी, नाथ! अब तक ना बुझी।
इस हेतु जल से तुम चरण युग, जजन की मनसा जगी।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवताप शीतल हेतु भगवन्! बहुत का शरणा लिया।
फिर भी न शीतलता मिली, अब गंध से पद पूजिया।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुबार मैं जन्मा मरा, अब तक न पाया पार है।
अक्षय सुपद के हेतु अक्षत, से जजूँ तुम सार है।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा चमेली बकुल आदिक, पुष्प ले पूजा करूँ।
मनसिजविजेता तुम जजत, निज आत्मगुणपरिचय करूँ।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह भूख व्याधी पिंड लागी, किस विधी मैं छूटहूँ।
पकवान नानाविध लिये, इस हेतु ही तुम पूजहूँ।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञानतम दृष्टी हरे, निज ज्ञान होने दे नहीं।
इस हेतु दीपक से जजूँ, मन में उजेला हो सही।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय निर्वपामीति स्वाहा।

ये कर्मबैरी संग लागे, एक क्षण ना छोड़ते।
वर धूप अग्नी संग खेते, दूर से मुख मोड़ते।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल मोक्ष की अभिलाष लागी, किस तरह अब पूर्ण हो।
इस हेतु फल से तुम जजूँ, सब विघ्न बैरी चूर्ण हों।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनमोल रत्नत्रय निधी की, मैं करूँ अब याचना।
जजूँ अर्घ्य ले मुझ 'ज्ञानमति', कैवल्य हो यह कामना।।

श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

शांतिनाथ पदकंज में, चउसंघ शांती हेत।
शांतीधारा मैं करूँ, मिटे सकल भव खेद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

लाल कमल नीले कमल, पुष्प सुगंधित सार।
जिनपद पुष्पांजलि करूँ, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–रोला छंद –

भादों कृष्णा पाख, सप्तमि तिथि शुभ आई।
गर्भ बसे प्रभु आप, सब जन मन हरषाई।।
इन्द्र सुरासुर संघ, उत्सव करते भारी।
हम पूजें धर प्रीति, जिनवर पद सुखकारी।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां श्रीशांतिनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

जन्म लिया प्रभु आप, ज्येष्ठवदी चौदस में।
सुरगिरि पर अभिषेक, किया सभी सुरपति ने।।
शांतिनाथ यह नाम, रखा शांतिकर जग में।
हम नावें निज माथ, जिनवर चरणकमल में।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा ली प्रभु आप, ज्येष्ठ वदी चौदस के।
लौकांतिक सुर आय, बहु स्तवन उचरते।।

इंद्र सपरिकर आय, तप कल्याणक करते।
हम पूजें नत माथ, सब दुख संकट हरते।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान विकास, पौष सुदी दशमी के।
समवसरण में नाथ, राजें अधर कमल पे।।
इंद्र करें बहु भक्ति, बारह सभा बनी हैं।
सभी भव्य जन आय, सुनते दिव्य धुनी हैं।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लादशम्यां श्रीशांतिनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राप्त किया निर्वाण, ज्येष्ठ वदी चौदश में।
आत्यंतिक सुखशांति, प्राप्त किया उस क्षण में।।
महामहोत्सव इंद्र, करते बहुवैभव से।
हम पूजें तुम पाद, छुटें सभी भवदुःख से।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

विश्वशांतिकर्ता प्रभो! शांतिनाथ भगवान।
पूर्ण अर्घ्य अर्पण करत, पाऊँ सौख्य निधान।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

-सोरठा-

शांतिनाथ भगवान, सर्व शांतिकर जगत में।
पुष्पांजलि से पूज, पाऊँ निजसुख संपदा।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(16 अर्घ्य)

–शार्दूलविक्रीडित छंद –

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन् ! पादद्वयं ते प्रजाः।
हेतुस्तत्र विचित्रदुःखनिचयः, संसारघोरार्णवः।।
अत्यन्तस्फुरदुग्ररश्मिनिकर-व्याकीर्णभूमण्डलो।
ग्रैष्मः कारयतीन्दुपादसलिल-च्छायानुरागं रविः।।1।।

भगवन्! सब जन तव पद युग की, शरण प्रेम से नहिं आते।
उसमें हेतु विविध दुःखों से, भरित घोर भववारिधि है।।
अति स्फुरित उग्र किरणों से, व्याप्त किया भूमंडल है।
ग्रीषम ऋतु रवि राग कराता, इन्दुकिरण छाया जल में।।1।।

ॐ ह्रीं संसारदुःखभीतभव्यगणशरण्याय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रुद्धाशीर्विषदष्टदुर्जयविष-ज्वालावलीविक्रमो।
विद्याभेषजमन्त्रतोयहवने-र्याति प्रशांतिं यथा।।
तद्वत्ते चरणारुणांबुजयुग-स्तोत्रोन्मुखानां नृणाम्।
विघ्नाः कायविनायकाश्च सहसा, शाम्यन्त्यहो! विस्मयः।।2।।

क्रुद्धसर्प आशीविष डसने, से विषाग्नि युत मानव जो।
विद्या औषध मंत्रित जल, हवनादिक से विष शांति हो।।
वैसे तव चरणाम्बुज युग, स्तोत्र पढ़े जो मनुज अहो।
तनु नाशक सब विघ्न शीघ्र, अति शान्त हुए आश्चर्य अहो।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वविघ्नशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संतप्तोत्तमकांचन क्षितिधर-श्रीस्पर्द्धिगौरद्युते।
पुंसां त्वच्चरणप्रणामकरणात्, पीडाः प्रयान्ति क्षयं।।
उद्यद्भास्करविस्फुरत्करशत-व्याघातनिष्कासिता।
नानादेहिविलोचनद्युतिहरा, शीघ्रं यथा शर्वरी।।3।।

तपे श्रेष्ठ कनकाचल की, शोभा से अधिक कान्तियुत देव!
तव पद प्रणमन करते जो, पीड़ा उनकी क्षय हो स्वयमेव।।

उदित रवी की स्फुट किरणों से, ताड़ित हो झट निकल भगे।।
जैसे नाना प्राणी लोचन, द्युतिहर रात्री शीघ्र भगे।।3।।

ॐ ह्रीं प्रणतजनकष्टनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्येश्वरभंगलब्धविजया-दत्यन्तरौद्रात्मकान्।
नानाजन्मशतान्तरेषु पुरतो, जीवस्य संसारिणः।।
को वा प्रस्खलतीह केन विधिना, कालोग्रदावानला-
न्नस्याच्चेत्तव पादपद्मयुगलस्तुत्यापगावारणम्।।4।।

त्रिभुवन जन सब जीत विजयि बन, अति रौद्रात्मक मृत्यूराज!
भव-भव में संसारी जन के, सन्मुख धावे अति विकराल।।
किस विध कौन बचे जन इससे, काल उग्र दावानल से।
यदि तव पाद कमल की स्तुति, नदी बुझावे नहीं उसे।।4।।

ॐ ह्रीं स्तोतृणां मृत्युंजयपदप्रदायकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोकनिरन्तरप्रवितत-ज्ञानैकमूर्ते! विभो!
नानारत्नपिनद्धदंडरुचिर-श्वेतातपत्रतय!।।
त्वत्पादद्वयपूतगीतरवतः, शीघ्रं द्रवन्त्यामयाः।
दर्पाध्मातमृगेन्द्रभीमनिनदा-द्वन्या यथा कुञ्जराः।।5।।

लोकालोक निरन्तर व्यापी, ज्ञानमूर्तिमय शान्ति विभो।
नाना रत्न जटित दण्डे युत, रुचिर श्वेत छत्रत्रय है।।
तव चरणाम्बुज पूतगीत रव, से झट रोग पलायित हैं।
जैसे सिंह भयंकर गर्जन, सुन वन हस्ती भगते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं चरणाम्बुजस्तुतिकर्तृणां सर्वरोगविनाशकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यस्त्रीनयनाभिराम! विपुल-श्रीमेरुचूडामणे!
भास्वद् बालदिवाकरद्युतिहर-प्राणीष्टभामंडल!।।
अव्याबाधमचिन्त्यसारमतुलं, त्यक्तोपमं शाश्वतं।
सौख्यं त्वच्चरणारविंदयुगल-स्तुत्यैव संप्राप्यते।।6।।

दिव्यस्त्रीदृगसुन्दर विपुला, श्रीमेरू के चूड़ामणि।
तव भामंडल बाल दिवाकर, द्युतिहर सबको इष्ट अति।।
अव्याबाध अचिंत्य अतुल, अनुपम शाश्वत जो सौख्य महान्।
तव चरणारविंदयुगलस्तुति, से ही हो वह प्राप्त निधान।।6।।

ॐ ह्रीं स्तवनप्रसादात् स्तोतृणां अचिन्त्यसारसौख्यप्रदायकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यावन्नोदयते प्रभापरिकरः, श्रीभास्करो भासयं-
स्तावद्-धारयतीह पंकजवनं, निद्रातिभारश्रमम् ।।
यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवन्-न स्यात्प्रसादोदय-
स्तावज्जीवनिकाय एष वहति, प्रायेण पापं महत्।।7।।

किरण प्रभायुत भास्कर भासित, करता उदित न हो जब तक।
पंकज वन नहिं खिलते निद्रा, भार धारते हैं तब तक।।
भगवन् ! तव चरणद्वय का हो, नहीं प्रसादोदय जब तक।
सभी जीवगण प्रायः करके, महत् पाप धारें तब तक।।7।।

ॐ ह्रीं चरणकमलाश्रितजनसर्वपापप्रणाशकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिं शान्तिजिनेन्द्र! शांतमनस-स्त्वत्पादपद्माश्रयात्।
संप्राप्ताः पृथिवीतलेषु बहवः, शांत्यर्थिनः प्राणिनः।।
कारुण्यान्मम भाक्तिकस्य च विभो! दृष्टिं प्रसन्नां कुरु।
त्वत्पादद्वयदैवतस्य गदतः, शांत्यष्टकं भक्तितः।।8।।

शान्ति जिनेश्वर! शान्तचित्त से, शान्त्यर्थी बहु प्राणीगण।
तव पादाम्बुज का आश्रय ले, शान्त हुए हैं पृथिवी पर।।
तव पदयुग की शान्त्यष्टकयुत, स्तुति करते भक्ती से।
मुझ भाक्तिक पर दृष्टि प्रसन्न, करो भगवन्! करुणा करके।।8।।

ॐ ह्रीं स्वपादपद्माश्रयिशान्त्यर्थिभाक्तिकानां दृष्टिप्रसन्न-विधायकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रम्।
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तममम्बुजनेत्रम्।।9।।

शशि सम निर्मल वस्त्र शांतिजिन, शीलगुण व्रत संयम पात्र।
नमूँ जिनोत्तम अंबुजदृग को, अष्टशतार्चित लक्षणगात्र।।9।।

ॐ ह्रीं शीलगुणव्रतसंयमपात्राय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिंद्र-नरेन्द्रगणैश्च।
शांतिकरं गणशांतिमभीप्सुः, षोडशतीर्थकरं प्रणमामि।।10।।

चक्रधरों में पंचमचक्री, इन्द्र नरेन्द्र वृंद पूजित।
गण की शांति चहूँ षोडश, तीर्थंकर नमूँ शांतिकर नित।।10।।

ॐ ह्रीं पंचमचक्रिषोडशतीर्थंकराय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टि-र्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ।
आतपवारणचामरयुग्मे, यस्य विभाति च मंडलतेजः।।11।।

तरु अशोक सुरपुष्पवृष्टि, दुंदुभि दिव्यध्वनि सिंहासन।
चमर छत्र भामंडल ये अठ, प्रातिहार्य प्रभु के मनहर।।11।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षाद्यष्टप्रातिहार्यसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तं जगदर्चितशांतिजिनेन्द्रं, शांतिकरं शिरसा प्रणमामि।
सर्वगणाय तु यच्छतु शांतिं, मह्यमरं पठते परमां च।।12।।

उन भुवनार्चित शांतिकरं, शिर से प्रणमूँ शांति प्रभु को।
शांति करो सब गण को मुझको, पढ़ने वालों को भी हो।।12।।

ॐ ह्रीं सर्वगणाय स्तुतिपाठकाय मह्यं च परमशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः।
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः।।
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः।
तीर्थंकराः सततशांतिकरा भवंतु।।13।।

मुकुटहारकुंडल रत्नों युत, इन्द्रगणों से जो अर्चित।
इन्द्रादिक से सुरगण से भी, पादपद्म जिनके संस्तुत।।

प्रवरवंश में जन्में जग के, दीपक वे जिन तीर्थंकर।
मुझको सतत शांतिकर होवें, वे तीर्थेश्वर शांतीकर।।13।।

ॐ ह्रीं शक्रादिभिः स्तुतपादपद्माय सततशान्तिकराय श्रीशांतिनाथायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतुशांतिं भगवान् जिनेन्द्रः।।14।।

संपूजक प्रतिपालक जन, यतिवर सामान्य तपोधन को।
देशराष्ट्र पुर नृप के हेतू, हे भगवन्! तुम शांति करो।।14।।

ॐ ह्रीं संपूजक-प्रतिपालक-यतीन्द्रगण-देश-राष्ट्र-पुर-नृपतिगणशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेमं सर्वप्रजानां, प्रभवतु बलवान्धार्मिको भूमिपालः।
काले काले च सम्यग्वर्षतु, मघवा व्याधयो यांतु नाशं।।
दुर्भिक्षं चौरिमारी, क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं, प्रभवतु सततं, सर्वसौख्यप्रदायि।।15।।

सभी प्रजा में क्षेम नृपति, धार्मिक बलवान जगत् में हो।
समय-समय पर मेघवृष्टि हो, आधि व्याधि का भी क्षय हो।।
चौर मारि दुर्भिक्ष न क्षण भी, जग में जन पीड़ा कर हो।
नित ही सर्व सौख्यप्रद जिनवर, धर्मचक्र जयशील रहो।।15।।

ॐ ह्रीं क्षेम-धार्मिकनृपति-समयसमयवृष्टिकारकाय व्याधि-दुर्भिक्षचौरिमारि-कष्टनिवारकाय सर्वसौख्यकरधर्मचक्रप्रवर्तकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रध्वस्तघातिकर्माणः, केवलज्ञानभास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शांतिं, वृषभाद्या जिनेश्वराः।।16।।

घातिकर्म विध्वंसक जिनवर, केवलज्ञानमयी भास्कर।
करें जगत में शांति सदा, वृषभादि जिनेश्वर तीर्थंकर।।16।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानभास्कर-जगत्-शांतिकारकवृषभादि-तीर्थंकर-समन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंचलिका

इच्छामि भंते! संतिभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं पंचमहा-कल्लाणसंपण्णाणं, अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं, चउतीसातिसयविसेससंजुत्ताणं, बत्तीसदेवेंदमणिमयमउडमत्थय-महियाणं, बलदेववासुदेवचक्कहर-रिसिमुणिजइ-अणगारोव-गूढाणं, थुइसयसहस्सणिलयाणं उसहाइवीरपच्छिम-मंगलमहा-पुरिसाणं, णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिनगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

हे भगवन्! श्री शांतिभक्ति का, कायोत्सर्ग किया उसके।
आलोचन करने की इच्छा, करना चाहूँ मैं रुचि से।।
अष्टमहा प्रातिहार्य सहित जो, पंचमहाकल्याणक युत।
चौतिस अतिशय विशेष युत, बत्तिस देवेन्द्र मुकुट चर्चित।।
हलधर वासुदेव प्रतिचक्री, ऋषि मुनि यति अनगार सहित।
लाखों स्तुति के निलय वृषभ से, वीर प्रभू तक महापुरुष।।
मंगल महापुरुष तीर्थंकर, उन सबको शुभ भक्ती से।
नित्यकाल मैं अर्चूं पूजूँ, वंदूँ नमूँ महामुद से।।
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय, हो मम बोधिलाभ होवे।
सुगति गमन हो समाधिमरणं, मम जिनगुण सम्पत्ति होवे।।
पूर्ण अर्घ्य मैं करूँ समर्पण, मेरे कार्य पूर्ण होवें।
शांतिनाथ की पूजा करते, सब जग में मंगल होवे।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचमहाकल्याण-अष्टमहाप्रातिहार्य-चतुस्त्रिंशदतिशयसमन्वित-द्वात्रिंशदिन्द्रगण-चक्रवर्तिवलदेववासुदेवादिपूजित-गणधरमुनिगणादिवंदितवृषभादि-महावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **(1) ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथाय जगत्-शांतिकराय सर्वोपद्रवशांतिं कुरु कुरु ह्रीं नमः।**

(2) ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय नमः।

(इनमें से कोई भी 1 जाप्य पुष्पों से या लवंग से या पीले चावल से 108 बार करें या 9 बार जपें)

जयमाला

–दोहा –

हस्तिनागपुर में हुये, गर्भ जन्म तप ज्ञान।
सम्मेदाचल मोक्ष थल, गाऊँ प्रभु गुणगान।।1।।

–स्रग्विणी छंद –

मैं नमूँ मैं नमूँ शांति तीर्थेश को। नाथ मेरे हरो सर्व भवक्लेश को।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।2।।

विश्वसेन प्रिया मात ऐरावती। वर्ष इक लाख आयू कनक वर्ण ही।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।3।।

देह चालीस धनु चिन्ह मृग ख्यात है। जन्म भू हस्तिनापूरि विख्यात है।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।4।।

नाथ के समवसृति में सभा मध्य ये। साधु बासठ सहस मूलगुणधारि थे।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।5।।

चक्र आयुध प्रमुख गणपती श्रेष्ठ थे। ऋद्धि संयुक्त छत्तीस मुनिज्येष्ठ थे।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।6।।

आर्यिका हरीषेणा प्रधाना तथा। साठ हज्जार त्रय सौ सभी आर्यिका।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।7।।

दोय लक्षा सुश्रावक प्रभू भाक्तिका। चार लक्षा कहीं श्राविका सद्व्रता।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।8।।

सौख्य हेतू भटकता फिरा विश्व में। किंतु पाई न साता कहीं रंच मैं।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।9।।

नाथ ऐसी कृपा कीजिए भक्त पे। शुद्ध सम्यक्त्व की प्राप्ति होवे अबे।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।10।।

स्वात्म पर का मुझे भेद विज्ञान हो। पूर्ण चारित्र धारूँ जो निष्काम हो।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।11।।

पूर्ण शांती जहाँ पे वहीं वास हो। भक्त ये आपका आपके पास हो।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।12।।

–दोहा –

तीर्थंकर चक्री मदन, तीनों पद के ईश।
पूर्ण ''ज्ञानमति'' हेतु मैं, नमूँ नमूँ नतशीश।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा –

शांतिनाथ की अर्चना, हरे सकल दुःख दोष।
सर्व अमंगल दूर कर, भरे स्वात्मसुखतोष।।1।।

–शेर छंद –

जो भव्य शांतिभक्ति का, विधान यह करें।
वे आधि व्याधि, शोक, दुःख का शमन करें।।
संसार के सम्पूर्ण सौख्य, संपदा धरें।
कैवल्य ''ज्ञानमती'' से, निजात्मसुख भरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

बड़ी जयमाला

–दोहा–

घाति चतुष्टय घातकर प्रभु तुम हुए कृतार्थ।
नव केवल लब्धीरमा, उसको किया सनाथ।।1।।

–शेरछंद–

प्रभु दर्शमोहनीय को निर्मूल किया है।
सम्यक्त्व क्षायिकाख्य को परिपूर्ण किया है।।
चारित्र मोहनीय का विनाश जब किया।
क्षायिक चरित्र नाम यथाख्यात को लिया।।2।।

संपूर्ण ज्ञानावर्ण का जब आप क्षय किया।
कैवल्य ज्ञान से त्रिलोक जान सब लिया।।
प्रभु दर्शनावरण के क्षय से दर्श अनंता।
सब लोक औ अलोक देखते हो तुरंता।।3।।

दानांतराय नाश के अनंत प्राणि को।
देते अभय उपदेश तुम शिवपथ का दान जो।।
लाभान्तराय का समस्त नाश जब किया।
क्षायिक अनंतलाभ का तब लाभ प्रभु लिया।।4।।

जिससे परमशुभ सूक्ष्म दिव्य नंत वर्गणा।
पुद्गलमयी प्रत्येक समय पावते घना।।
जिससे न कवलाहार हो फिर भी तनू रहे।
शिवप्राप्त होने तक शरीर भी टिका रहे।।5।।

भोगांतराय नाश के अतिशय सुभोग हैं।
सुरपुष्पवृष्टि गंध उदकवृष्टि शोभ हैं।।
पग के तले वरपद्म रचें देवगण सदा।
सौगंध्य शीतपवन आदि सौख्य शर्मदा।।6।।

उपभोग अन्तराय का क्षय हो गया जभी।
प्रभु सातिशय उपभोग को भी पा लिया तभी।।

सिंहासनादि छत्र चंवर तरु अशोक हैं।
सुर दुंदुभी भाचक्र दिव्यध्वनि मनोज्ञ हैं।।7।।

वीर्यान्तराय नाश से आनत्य वीर्य हैं।
होते न कभी श्रांत आप धीर वीर हैं।।
प्रभु चार घाति नाश के नव लब्धि पा लिया।
आनन्त्य ज्ञान आदि चतुष्टय प्रमुख किया।।8।।

जय जय श्री जिनदेव देवदेव हमारे।
जय जय प्रभो! तुम सेव करें सुरपति सारे।।
जय जय अनंत सौख्य के भंडार आप हो।
जय जय समोसरण के सर्वस्व आप हो।।9।।

जो भव्य भक्ति से तुम्हें निज शीश नावते।
वे शिरोरोग नाश स्मृति शक्ति पावते।।
जो एकटक हो नेत्र से प्रभु आप को निरखें।
उन मोतिबिन्दु आदि नेत्र व्याधियाँ नशें।।10।।

जो कान से अति प्रीति से तुम वाणि को सुनें।
उनके समस्त कर्ण रोग भागते क्षण में।।
जो मुख से आपकी सदैव संस्तुती करें।
मुख दंत जिह्वा तालु रोग शीघ्र परिहरें।।11।।

जो कंठ में प्रभु आपकी गुणमाल पहनते।
उनके समस्त कंठ ग्रीवा रोग विनशते।।
श्वासोच्छ्वास से जो आप मंत्र को जपते।
सब श्वांस नासिकादि रोग उनके विनशते।।12।।

जो निज हृदय कमल में आप ध्यान करे हैं।
वे सर्व हृदय रोग आदि क्षण में हरे हैं।।
जो नाभिकमल में तुम्हें नित धारते मुदा।
नश जातीं उनकी सर्व उदर व्याधियाँ व्यथा।।13।।

जो पैर से जिनगृह में आके नृत्य करे हैं।
वे घुटने पैर रोग सर्व नष्ट करे हैं।।

पंचांग जो प्रणाम करें आपको सदा।
उनके समस्त देह रोग क्षण में हों विदा।।14।।

जो मन में आपके गुणों का स्मरण करें।
वे मानसिक व्यथा समस्त ही हरण करें।।
ये तो कुछेक फल प्रभो! तुम भक्ति किये से।
फल तो अचिन्त्य है न कोई कह सके उसे।।15।।

तुम भक्ति अकेली समस्त कर्म हर सके।
तुम भक्ति अकेली अनंत गुण भी भर सके।।
तुम भक्ति भक्त को स्वयं भगवान बनाती।
फिर कौन-सी वो वस्तु जिसे ये न दिलाती।।16।।

अतएव नाथ! आप चरण की शरण लिया।
संपूर्ण व्यथा मेट दीजिए अरज किया।।
अन्यत्र नहीं जाऊँगा मैंने परण किया।
बस 'ज्ञानमती' पूरिये यहँ पे धरण दिया।।17।।

श्री पूज्यपादयतीकृत[1], भक्ती अचिन्त्य है।
जो नेत्ररोग हरण में, अतिशय प्रसिद्ध है।।
यह शांतिभक्ति का विधान सर्व व्याधिहर।
भवरोग दूर करने में भी पूर्ण है प्रवर।।18।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद–

जो भव्य शांतिभक्ति का, विधान यह करें।
वे आधि व्याधि, शोक, दुःख का शमन करें।।
संसार के सम्पूर्ण सौख्य, संपदा धरें।
कैवल्यज्ञानमती से, निजात्मसुख भरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

1. श्री पूज्यपाद स्वामी महामुनि द्वारा रचित शांतिभक्ति के प्रभाव से उन आचार्य की नेत्र ज्योति वापस आ गई थी। उसी भक्ति पर यह विधान बना है।

प्रशस्ति

-दोहा-

शांतिनाथ तीर्थेश को, नमूँ अनन्तों बार।
कुंथुनाथ अरनाथ को, नमूँ भक्ति उरधार।।1।।

कुंदकुंद आम्नाय में, गच्छ सरस्वती मान्य।
बलात्कारगण सिद्ध है, उनमें सूरि प्रधान।।2।।

सदी बीसवीं के प्रथम, शांतिसागराचार्य।
उनके पट्टाचार्य थे, वीरसागराचार्य।।3।।

देकर दीक्षा आर्यिका, दिया ज्ञानमती नाम।
गुरुवर कृपा प्रसाद से, सार्थ हुआ कुछ नाम।।4।।

वीर अब्द पच्चीस सौ, उनतालिस जगसिद्ध।
चैत्र शुक्ल तृतिया तिथी, केवलज्ञान पवित्र[1]।।5।।

शांतीभक्ति विधान यह, किया संकलित पूर्ण।
पूज्यपाद गुरुदेव की, भक्ती से परिपूर्ण।।6।।

शांती देवी[2] प्रेरणा लघु विधान निर्माण।
करो करावे भव्यजन, पावो सौख्य निधान।।7।।

शांतिनाथ भगवान का, जब तक तीर्थ महान्।
भक्त जनों का हित करे, तब तक भक्ति विधान।।8।।

1. श्री कुंथुनाथ की केवलज्ञान तिथि है। 2. सौ. शांति देवी, डालीगंज-लखनऊ निवासी हैं उनकी प्रेरणा से मैंने यह विधान बनाया है।

आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

आरति करो रे,
श्री शांतिनाथ सोलहवें जिन की आरति करो रे।।टेक.।।

प्रभु आरति से सब जन का, मिथ्यात्व तिमिर नश जाता है,
भव-भव के कल्मष धुलकर, सम्यक्त्व उजाला आता है,
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्री मोहमहामदनाशक प्रभु की आरति करो रे।।श्री शांति....।।1।।

प्रभु ने जन्म लिया जब भू पर, नरकों में भी शांति मिली।
ऐरादेवी के आंगन में, आनंद की इक लहर चली।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
जय विश्वसेन के प्रिय नन्दन की आरति करो रे।।श्री शांति...।।2।।

शांतिनाथ निज चक्ररत्न से, षट्खंडाधिपती बने।
इस वैभव में शांति न लखकर, रत्नत्रय के धनी बने।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्री शांतिनाथ पंचम चक्री की आरति करो रे।।श्री शांति....।।3।।

जो प्रभु के दरबार में आता, इच्छित फल को पाता है।
आत्मशक्ति को विकसित कर, 'चंदनामती' शिव पाता है।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
मुक्ति श्री के अधिनायक प्रभु की आरति करो रे।।श्री शांति....।।4।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–बहुत प्यार करते हैं हम.....

शांतिनाथ प्रभु को है, मेरा नमन।
चरण में समर्पित-2 हैं भक्ती सुमन।। शांतिनाथ.....।। टेक.।।

माँ ऐरादेवी के घर, रत्न खूब बरसे।
हस्तिनापुरी में पिता, विश्वसेन हरषे।।
ज्येष्ठ वदी चौदश को-2, हुआ प्रभु जनम।। शांतिनाथ.....।।1।।

चक्रवर्ती पाँचवें वे, शांतिनाथ स्वामी हैं।
कामदेव तीर्थंकर की, पदवी से नामी हैं।।
हस्तिनापुरी की धरती-2, हुई धन्य धन।। शांतिनाथ.....।।2।।

राजसुख को भोग उसको, त्याग दिया क्षण में।
बनकर के जिनवर राजे, समवसरण में।।
'चंदना' हुए वे अपने-2, आप में मगन।। शांतिनाथ.....।।3।।

मण्डल का नक्शा

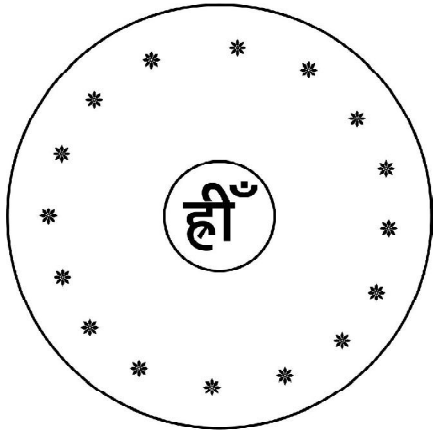

भगवान शांतिनाथ के शासन देव गरुड़ यक्ष एवं महामानसी देवी पूजा

-ब्र. कु. स्वाति जैन (संघस्थ)*

-स्थापना (शंभु छंद)-

श्री शांतिनाथ तीर्थंकर के जिन शासनदेव गरुड़ सुर हैं।
श्री महामानसी देवी उनके शासन की देवी सुरि हैं।।
तीर्थंकर चक्री कामदेव त्रयपदधारी के भक्त कहे।
ये शासन देव सभी जिनवर की भक्ती में अनुरक्त रहें।।1।।

-दोहा-

गरुड़ यक्ष महामानसी, देवी का आह्वान।
करूँ यहाँ स्थापना, तथा करूँ सन्मान।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेव-गरुड़यक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पाञ्जलिः।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेव-गरुड़यक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेव-गरुड़यक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेवि महामानसी मातः! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पाञ्जलिः।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेवि महामानसी मातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेवि महामानसी मातः! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

---

* वर्तमान आर्यिका श्री स्वर्णमती माताजी (संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

-अष्टक- (चाल-नन्दीश्वर पूजन)

गंगा का शीतल स्वच्छ, नीर कलश लाया।
भौतिक सुख प्राप्ती हेतु, पूजन को आया।।
श्री शांतिनाथ के यक्ष, गरुड़ देव आओ।
हे महामानसी देवि! अतिशय दिखलाओ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेव-गरुड़यक्ष! इदं जलं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेवि महामानसी मातः! इदं जलं गृहाण गृहाण स्वाहा।

चंदन में श्वेत सुगंध, घिस करके लाया।
भौतिक सुख प्राप्ती हेतु, पूजन को आया।।
श्री शांतिनाथ के यक्ष, गरुड़ देव आओ।
हे महामानसी देवि! अतिशय दिखलाओ।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेव-गरुड़यक्ष! इदं चंदनं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेवि महामानसी मातः! इदं चंदनं गृहाण गृहाण स्वाहा।

उज्वल तंदुल के पुंज, थाली भर लाया।
भौतिक सुख प्राप्ती हेतु, पूजन को आया।।
श्री शांतिनाथ के यक्ष, गरुड़ देव आओ।
हे महामानसी देवि! अतिशय दिखलाओ।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेव-गरुड़यक्ष! इदं अक्षतं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेवि महामानसी मातः! इदं अक्षतं गृहाण गृहाण स्वाहा।

चंपक गुलाब के पुष्प, चुन-चुनकर लाया।
भौतिक सुख प्राप्ती हेतु, पूजन को आया।।

श्री शांतिनाथ के यक्ष, गरुड़ देव आओ।
हे महामानसी देवि! अतिशय दिखलाओ।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेव-गरुड़यक्ष! इदं पुष्पं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेवि महामानसी मातः! इदं पुष्पं गृहाण गृहाण स्वाहा।

नाना विधि के पकवान, थाली भर लाया।
भौतिक सुख प्राप्ती हेतु, पूजन को आया।।
श्री शांतिनाथ के यक्ष, गरुड़ देव आओ।
हे महामानसी देवि! अतिशय दिखलाओ।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेव-गरुड़यक्ष! इदं नैवेद्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेवि महामानसी मातः! इदं नैवेद्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

घृत दीप जलाकर थाल, आरति को लाया।
भौतिक सुख प्राप्ती हेतु, पूजन को आया।।
श्री शांतिनाथ के यक्ष, गरुड़ देव आओ।
हे महामानसी देवि! अतिशय दिखलाओ।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेव-गरुड़यक्ष! इदं दीपं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेवि महामानसी मातः! इदं दीपं गृहाण गृहाण स्वाहा।

मैं धूप सुगंध बनाय, थाली भर लाया।
भौतिक सुख प्राप्ती हेतु, पूजन को आया।।
श्री शांतिनाथ के यक्ष, गरुड़ देव आओ।
हे महामानसी देवि! अतिशय दिखलाओ।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेव-गरुड़यक्ष! इदं धूपं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेवि महामानसी मातः! इदं धूपं गृहाण गृहाण स्वाहा।

अंगूर आम बादाम, आदिक फल लाया।
भौतिक सुख प्राप्ती हेतु, पूजन को आया।।
श्री शांतिनाथ के यक्ष, गरुड़ देव आओ।
हे महामानसी देवि! अतिशय दिखलाओ।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेव-गरुड़यक्ष! इदं फलं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेवि महामानसी मातः! इदं फलं गृहाण गृहाण स्वाहा।

वस्त्रालंकार मंगाय, हार मुकुट लाया।
भौतिक सुख प्राप्ती हेतु, पूजन को आया।।
श्री शांतिनाथ के यक्ष, गरुड़ देव आओ।
हे महामानसी देवि! अतिशय दिखलाओ।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेव-गरुड़यक्ष! इदं वस्त्रालंकरणादि गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेवि महामानसी मातः! इदं वस्त्रालंकरणादि गृहाण गृहाण स्वाहा।

जल फल वसु द्रव्य सजाय, अर्घ्य थाल लाया।
भौतिक सुख प्राप्ती हेतु, पूजन को आया।।
श्री शांतिनाथ के यक्ष, गरुड़ देव आओ।
हे महामानसी देवि! अतिशय दिखलाओ।।10।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेव-गरुड़यक्ष! इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेवि महामानसी मातः! इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

जयमाला

हे शांतिनाथ जिनवर! त्रैलौक्य मान्य हो।
हे शांतिनाथ जिनवर! गुणमणि की खान हो।।
हे शांतिनाथ जिनवर! सबसे महान हो।
हे शांतिनाथ जिनवर! कल्याणधाम हो।।1।।

हे नाथ! आप सोलवें तीर्थेश कहाये।
चक्रीश और कामदेव पदवी को पाये।।
तीनों पदों से युक्त आप प्रथम नाथ हैं।
त्रैलोक्यपूज्य सिद्धि प्रिया के भी नाथ हैं।।2।।

श्री हस्तिनापुरी नगरि में जन्म लिया था।
ऐरावती रानी की कुक्षि धन्य किया था।।
नृप विश्वसेन के हरष का पार नहीं था।
स्वर्गों में इन्द्र का हरष अपार वहीं था।।3।।

छह खण्ड के अधिपति बने श्री शांतिनाथ जी।
छ्यानवे सहस रानियाँ उनसे सनाथ थीं।।
भोगों को भोगकर उन्हें वैराग्य हो गया।
दर्पण में दो मुख देख जग का त्याग कर दिया।।4।।

उन चार कल्याणक हुए थे हस्तिनापुर में।
फिर मोक्ष धाम को गये सम्मेदशिखर से।।
इन पंचकल्याणकपती तीर्थेश को नमूँ।
नवनिधि की प्राप्ति हेतु श्री शांतीश को नमूँ।।5।।

इन प्रभु के शासनदेव गरुड़यक्ष कहे हैं।
जो शान्तिनाथ प्रभु की सदा भक्ति करे हैं।।
जिनधर्म की प्रभावना में सजग रहते हैं।
प्रभु के समवसरण में निज कर्तव्य करते हैं।।6।।

हे देव गरुड़ मैं तुम्हारी अर्चना करूँ।
लौकिक सुखों की इच्छा से मैं वंदना करूँ।।
हे देवि महामानसी तुमको नमन करूँ।
विघ्नों की शांति हेतु हे माता तुम्हें प्रणमूँ।।7।।

हे देव गरुड़ और महामानसी देवी।
दोनों की अर्चना तथा सम्मान है यही।।
हम सब के सुख व शांति में सहयोग कीजिए।
सम्यक्त्व की दृढ़ता का भी संयोग दीजिए।।8।।

यह भक्ति सुमन थाल को अर्पित करूँ यहाँ।
वस्त्राभरण व मुकुट माल भी धरूँ यहाँ।।
इन सबको आप लोग अब स्वीकार कीजिए।
''स्वाती'' की मनोकामना साकार कीजिए।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेव-गरुड़यक्ष! इदं जयमाला अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीशांतिनाथस्य शासनदेवि महामानसी मातः! इदं जयमाला अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

गरुड़देव महामानसी, देवी का सन्मान।
करो सभी सुखसन्तती, मिले होय कल्याण।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–बहुत प्यार करते हैं हम.....

शांतिनाथ प्रभु को है, मेरा नमन।
चरण में समर्पित-2 हैं भक्ती सुमन।। शांतिनाथ.....।। टेक.।।

माँ ऐरादेवी के घर, रत्न खूब बरसे।
हस्तिनापुरी में पिता, विश्वसेन हरषे।।
ज्येष्ठ वदी चौदश को-2, हुआ प्रभु जनम।। शांतिनाथ.....।।1।।

चक्रवर्ती पाँचवें वे, शांतिनाथ स्वामी हैं।
कामदेव तीर्थंकर की, पदवी से नामी हैं।।
हस्तिनापुरी की धरती-2, हुई धन्य धन।। शांतिनाथ.....।।2।।

राजसुख को भोग उसको, त्याग दिया क्षण में।
बनकर के जिनवर राजे, समवसरण में।।
'चंदना' हुए वे अपने-2, आप में मगन।। शांतिनाथ.....।।3।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–वह शक्ति.....

हे विश्वशांति के उपदेष्टा, श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।
हे धर्म अहिंसा के नेता, श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।।टेक.।।

उपकार करूँ सारे जग का, यह भाव हृदय में आता है।
दुःखियों को देख हृदय रोता, मन करुणा से भर जाता है।।
दो शक्ति मुझे मैं सब जग का, दुख दूर कर सकूँ कभी स्वयं।
हे विश्वशांति के उपदेष्टा,
श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।।1।।

भारत इक था गुलजार चमन, हिंसा ने उसको नष्ट किया।
सच्चाई के इस उपवन को, स्वार्थी तत्वों ने भ्रष्ट किया।।
ऐसी शक्ती हो प्रगट सभी में, विश्वशांति से करूँ चमन।
हे विश्वशांति के उपदेष्टा,
श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।।2।।

भगवान न यदि बन सकूँ तो मैं, इंसान की श्रेणी पा जाऊँ।
यदि साधु नहीं बन सकूँ तो मैं, सज्जन की श्रेणी पा जाऊँ।।
है भाव यही 'चंदनामती', खिल जावे भारत का उपवन।
हे विश्वशांति के उपदेष्टा,
श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।।3।।